https://printo.it/pediatric-rheumatology/IN_HI/intro

माजीद

के संस्करण 2016

3. दैनिक जीवन

3.1 इस बीमारी से बच्चे एवं माता-पिता का दैनिक जीवन कैसे प्रभावित होता है?

बीमारी का पता लगने के पूर्व ही बच्चे और उसके माता-पिता को बहुत सारी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है।

कुछ बच्चों को हड्डी से संबंधित विकृतियों का सामना करना पड़ता है जिससे उनकी दिनचर्या में विघ्न/बाधा पड़ती है। आजीवन इलाज चलने के कारण कई बार यह एक मनोवैज्ञानिक समस्या का रूप धारण कर लेती है। शैक्षणिक कार्यक्रमों के द्वारा मरीज़ों एवं उनके माता पिता को इन सभी समस्याओं के विषय में जागृत किया जा सकता है।

3.2 स्कूल का क्या होगा ?

बीमार बच्चों का स्कूल जाना बंद नहीं करना चाहिए। ऐसा हो सकता है कि बार बार बीमार पड़ने की वजह से बच्चे को स्कूल जाने में समस्या हो। इसलिए यह ज़रूरी है कि बच्चे के शिक्षकों को इस बीमारी की पूरी जानकारी हो। ऐसा करने पर वे बच्चे की सारी ज़रूरतों पर ध्यान दे सकेंगे। इससे बच्चे की पढ़ाई पर विपरीत असर नहीं होगा और वह अपने मित्रों और वयस्कों द्वारा स्वीकारा और सराहा जाएगा। पेशेवर दुनिया में भविष्य में एकीकरण करने के लिए ऐसा करना बहुत ज़रूरी है।

3.3 खेल-कूद के बारे में क्या राय है?

खेल-कूद हर बच्चे के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस चिकित्सा विधान का उद्देश्य यह है कि बच्चे अपनी जिंदगी जहाँ तक हो सके, सामान्य रूप से जिएँ और अपने-आप को दूसरे बच्चों से अलग न समझें। इसलिए सहनशीलता के अनुसार सभी कार्यकलाप किए जा सकते हैं। लेकिन, बीमारी के दौरान शारीरिक गतिविधि को सीमित रखना होगा या आराम करना होगा।

3.4 क्या खान-पान पर कोई पाबंदी है?

नहीं, ऐसा कुछ भी नहीं है।

3.5 मौसम के कारण क्या रोग पर कोई प्रभाव पड़ता है?
नहीं, मौसम के कारण रोग पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

3.6 क्या बच्चे को टीके लगाए जा सकते हैं?
जी हाँ, बच्चे को टीके ज़रूर लगाए जा सकते हैं, जैविक टीके देने से पहले चिकित्सक/डॉक्टर को बीमारी के बारे में जानकारी देना ज़रूरी है।

3.7 यौन जीवन, गर्भधारण और परिवार नियोजन के बारे में क्या किया जा सकता है?
इस विषय पर आजतक कोई लिखित जानकारी उपलब्ध नहीं है। लेकिन, सामान्य नियमानुसार अन्य बीमारीयों की तरह गर्भधारण के पूर्व ही इन दवाइयों के भ्रूण पर होने वाले असर के बारे में सोच लेना उत्तम है।